दशलक्षण-धर्म पूजा

(अडिल्ल छन्द)

उत्तमछिमा मारदव आरजव भाव हैं,
सत्य शौच संयम तप त्याग उपाव हैं।
आकिंचन ब्रह्मचर्य धरम दश सार हैं,
चहुँगति दुःख तें काढ़ि मुकति करतार हैं ॥

ओं ह्रीं श्री उत्तमक्षमादि-दशलक्षणधर्म! अत्र अवतर अवतर संवौषट्! (आह्वाननम्)
ओं ह्रीं श्री उत्तमक्षमादि-दशलक्षणधर्म!अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः! (स्थापनम्)
ओं ह्रीं श्री उत्तमक्षमादि-दशलक्षणधर्म! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्! (सन्निधिकरणम्)

(सोरठा छन्द)

हेमाचल की धार, मुनि-चित सम शीतल सुरभि।
भव-आताप निवार, दस-लक्षण पूजूं सदा ॥
ओं ह्रीं श्री उत्तमक्षमा-मार्दव-आर्जव-सत्य-शौच-संयम-तप-त्याग- आकिञ्चन्य-ब्रह्मचर्येति दशलक्षणधर्माय जन्म-जरा-मृत्यु-विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा ।

चंदन-केशर गार, होय सुवास दशों दिशा।
भव-आताप निवार, दस-लक्षण पूजूं सदा ॥
ओं ह्रीं श्री उत्तमक्षमादि-दशलक्षणधर्माय भवताप-विनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा ।

अमल अखंडित सार, तंदुल चंद्र-समान शुभ।
भव-आताप निवार, दस-लक्षण पूजूं सदा ॥
ओं ह्रीं श्री उत्तमक्षमादि-दशलक्षणधर्माय अक्षयपद-प्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा ।

फूल अनेक प्रकार, महकें ऊरध-लोक लों।
भव-आताप निवार, दस-लक्षण पूजूं सदा ॥
ओं ह्रीं श्री उत्तमक्षमादि-दशलक्षणधर्माय कामबाण-विध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा ।

नेवज विविध निहार, उत्तम षट्-रस संजुगत।
भव-आताप निवार, दस-लक्षण पूजूं सदा ॥
ओं ह्रीं श्री उत्तमक्षमादि-दशलक्षणधर्माय क्षुधारोग-विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

बाति कपूर सुधार, दीपक-जोति सुहावनी।
भव-आताप निवार, दस-लक्षण पूजूं सदा ॥
ओं ह्रीं श्री उत्तमक्षमादि-दशलक्षणधर्माय मोहांधकार-विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा ।

eAstroHelp

अगर धूप विस्तार, फैले सर्व सुगंधता |
भव-आताप निवार, दस-लक्षण पूजूं सदा ||
ओं ह्रीं श्री उत्तमक्षमादि-दशलक्षणधर्माय अष्टकर्म-दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा ।

फल की जाति अपार, घ्राण-नयन-मन-मोहने |
भव-आताप निवार, दस-लक्षण पूजूं सदा ||
ओं ह्रीं श्री उत्तमक्षमादि-दशलक्षणधर्माय मोक्षफल-प्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा ।

आठों दरब संवार, 'द्यानत' अधिक उछाह सों
भव-आताप निवार, दस-लक्षण पूजूं सदा ||
ओं ह्रीं श्री उत्तमक्षमादि-दशलक्षणधर्माय अनर्घ्यपद-प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

(दस धर्म-अंग पूजा)(सोरठा)

पीड़ें दुष्ट अनेक, बाँध मार बहुविधि करें |
धरिये छिमा-विवेक, कोप न कीजे पीतमा ||

(चौपाई छन्द)

उत्तम-छिमा गहो रे भाई, इहभव जस परभव सुखदाई |
गाली सुनि मन खेद न आनो, गुन को औगुन कहे अयानो ||

(गीता छन्द)

कहि है अयानो वस्तु छीने, बाँध मार बहुविधि करे |
घर तें निकारे तन विदारे, बैर जो न तहाँ धरे ||
तैं करम पूरब किये खोटे, सहे क्यों नहिं जीयरा |
अति क्रोध-अगनि बुझाय प्रानी, साम्य-जल ले सीयरा ||
ओं ह्रीं श्री उत्तम क्षमाधर्मांगाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

मान महा विषरूप, करहि नीच-गति जगत् में |
कोमल-सुधा अनूप, सुख पावे प्रानी सदा ||
उत्तम-मार्दव-गुन मन माना, मान करन को कौन ठिकाना |
बस्यो निगोद माहि तें आया, दमड़ी-रूकन भाग बिकाया ||

रूकन बिकाया भाग वशतें, देव इकइंद्री भया |
उत्तम मुआ चांडाल हूवा, भूप कीड़ों में गया ||
जीतव्य जोवन धन गुमान, कहा करे जल-बुदबुदा |
करि विनय बहु-गुन बड़े जन की, ज्ञान का पावें उदा ||
ओं ह्रीं श्री उत्तम मार्दवधर्मांगाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

कपट न कीजे कोय, चोरन के पुर ना बसें |
सरल-सुभावी होय, ताके घर बहु-संपदा ||
उत्तम आर्जव-रीति बखानी, रंचक दगा बहुत दुःखदानी |
मन में हो सो वचन उचरिये, वचन होय सो तन सों करिये ||

करिये सरल तिहुँ जोग अपने, देख निरमल आरसी |
मुख करे जैसा लखे तैसा, कपट-प्रीति अंगार-सी ||
नहिं लहे लछमी अधिक छल करि, कर्म-बंध-विशेषता |
भय-त्यागि दूध बिलाव पीवे, आपदा नहिं देखता ||
ओं ह्रीं श्री उत्तम आर्जवधर्मांगाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

eAstroHelp

कठिन-वचन मत बोल, पर-निंदा अरु झूठ तज।
साँच जवाहर खोल, सतवादी जग में सुखी ॥
उत्तम-सत्य-वरत पालीजे, पर-विश्वासघात नहिं कीजे।
साँचे-झूठे मानुष देखो, आपन-पूत स्वपास न पेखो ॥

पेखो तिहायत पुरुष साँचे, को दरब सब दीजिए।
मुनिराज-श्रावक की प्रतिष्ठा, साँच-गुण लख लीजिये ॥
ऊँचे सिंहासन बैठि वसु-नृप, धरम का भूपति भया।
वच-झूठ-सेती नरक पहुँचा, सुरग में नारद गया ॥
ओं ह्रीं श्री उत्तम सत्यधर्मांगाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

धरि हिरदै संतोष, करहु तपस्या देह सों।
शौच सदा निरदोष, धरम बड़ो संसार में ॥
उत्तम शौच सर्व-जग जाना, लोभ 'पाप को बाप' बखाना।
आशा-पास महादुःखदानी, सुख पावे संतोषी प्रानी ॥

प्रानी सदा शुचि शील-जप-तप, ज्ञान-ध्यान प्रभाव तें।
नित गंग जमुन समुद्र न्हाये, अशुचि-दोष स्वभाव तें ॥
ऊपर अमल मल-भर्यो भीतर, कौन विधि घट शुचि कहे।
बहु देह मैली सुगुन-थैली, शौच-गुन साधु लहे ॥
ओं ह्रीं श्री उत्तम शौचधर्मांगाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

काय-छहों प्रतिपाल, पंचेन्द्री-मन वश करो।
संयम-रतन संभाल, विषय-चोर बहु फिरत हैं ॥
उत्तम संजम गहु मन मेरे, भव-भव के भाजें अघ तेरे।
सुरग-नरक-पशुगति में नाहीं, आलस-हरन करन सुख ठाहीं ॥

ठाहीं पृथी जल आग मारुत, रूख त्रस करुना धरो।
सपरसन रसना घ्रान नैनाँ, कान मन सब वश करो ॥
जिस बिना नहिं जिनराज सीझे, तू रुल्यो जग-कीच में।
इक घरी मत विसरो करो नित, आव जम-मुख बीच में ॥
ओं ह्रीं श्री उत्तम संयमधर्मांगाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तप चाहें सुरराय, करम-शिखर को वज्र है।
द्वादश विधि सुखदाय, क्यों न करे निज सकति सम ॥
उत्तम तप सब-माँहिं बखाना, करम-शैल को वज्र-समाना।
बस्यो अनादि-निगोद-मँझारा, भू-विकलत्रय-पशु-तन धारा ॥

धारा मनुष्-तन महा-दुर्लभ, सुकुल आयु निरोगता।
श्री जैनवानी तत्त्वज्ञानी, भई विषय-पयोगता ॥
अति महादुरलभ त्याग विषय, कषाय जो तप आदरें।
नर-भव अनूपम कनक-घर पर, मणिमयी-कलसा धरें ॥
ओं ह्रीं श्री उत्तम तपधर्मांगाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दान चार परकार, चार संघ को दीजिए।
धन बिजुली उनहार, नर-भव लाहो लीजिए ॥
उत्तम त्याग कह्यो जग सारा, औषध शास्त्र अभय आहारा।
निहचै राग-द्वेष निरवारे, ज्ञाता दोनों दान संभारे ॥

दोनों संभारे कूपजल-सम, दरब घर में परिनया।
निज हाथ दीजे साथ लीजे, खाय-खोया बह गया ॥
धनि साधु शास्त्र अभय-दिवैया, त्याग राग-विरोध को।
बिन दान श्रावक-साधु दोनों, लहें नाहीं बोध को ॥
ओं ह्रीं श्री उत्तम त्यागधर्मांगाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

eAstroHelp

परिग्रह चौबीस भेद, त्याग करें मुनिराज जी।
तिसना भाव उछेद, घटती जान घटाइए ॥
उत्तम आकिंचन गुण जानो, परिग्रह-चिंता दुःख ही मानो।
फाँस तनक-सी तन में साले, चाह लंगोटी की दुःख भाले ॥
भाले न समता सुख कभी नर, बिना मुनि-मुद्रा धरे।

धनि नगन पर तन-नगन ठाढ़े, सुर-असुर पायनि परें ॥
घर-माँहिं तिसना जो घटावे, रुचि नहीं संसार-सों।
बहु-धन बुरा हू भला कहिये, लीन पर उपगार कों ॥
ओं ह्रीं श्री उत्तम आकिंचन्यधर्मांगाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शील-बाड़ नौ राख, ब्रह्म-भाव अंतर लखो।
करि दोनों अभिलाख, करहु सफल नर-भव सदा ॥
उत्तम ब्रह्मचर्य मन आनो, माता-बहिन-सुता पहिचानो।
सहें बान- वरषा बहु सूरे, टिकें न नैन-बान लखि कूरे ॥

कूरे तिया के अशुचि तन में, काम-रोगी रति करें।
बहु मृतक सड़हिं मसान-माँहीं, काग ज्यों चोंचैं भरें ॥
संसार में विष-बेल नारी, तजि गये जोगीश्वरा।
'द्यानत' धरम दस पैंडि चढ़ि के, शिव-महल में पग धरा ॥
ओं ह्रीं श्री उत्तम ब्रह्मचर्यधर्मांगाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

----जयमाला----

(दोहा)

दसलच्छन वंदूं सदा, मनवाँछित फलदाय।
कहूँ आरती भारती, हम पर होहु सहाय।

(वेसरी छन्द)

उत्तम छिमा जहाँ मन होई, अंतर-बाहिर शत्रु न कोई।
उत्तम मार्दव विनय प्रकासे, नाना भेदज्ञान सब भासे ॥
उत्तम आर्जव कपट मिटावे, दुर्गति त्यागि सुगति उपजावे।
उत्तम सत्य वचन मुख बोले, सो प्रानी संसार न डोले ॥

उत्तम शौच लोभ-परिहारी, संतोषी गुण-रतन भंडारी।
उत्तम संयम पाले ज्ञाता, नर-भव सफल करे ले साता ॥
उत्तम तप निरवाँछित पाले, सो नर करम-शत्रु को टाले।
उत्तम त्याग करे जो कोई, भोगभूमि-सुर-शिवसुख होई ॥

उत्तम आकिंचन व्रत धारे, परम समाधि-दशा विस्तारे।
उत्तम ब्रह्मचर्य मन लावे, नर-सुर सहित मुकति-फल पावे ॥

(दोहा)

करे करम की निरजरा, भव-पींजरा विनाशि।
अजर-अमर पद को लहे, 'द्यानत' सुख की राशि ॥
ओंह्रीं श्री उत्तमक्षमा-मार्दव-आर्जव-सत्य-शौच-संयम-तप-त्याग- आकिञ्चन्यब्रह्मचर्येति दशलक्षणधर्माय जयमाला-पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

eAstroHelp